

अश्वगंधा का जड़ सड़न

कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 05, पृष्ठ संख्या 35-36

अश्वगंधा का जड़ सड़न: लक्षण और प्रबंधन

रवि कुमार¹, सौरभ कुमार¹, एवं पूजा शर्मा²¹पादप रोग विज्ञान विभाग,

चंद्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर, २०८००२ (उ. प्र.)

²कृषि वानिकी विभाग, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर, ४८२००२ (म. प्र.), भारत।

Email Id: rkm46327@gmail.com

परिचय

अश्वगंधा, जिसे बॉटेनिकल नाम विथानिआ सोमनीफेरा से जाना जाता है। यह एक प्रमुख औषधीय पौधा है जिसे आयुर्वेदिक और हर्बल चिकित्सा में व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है। यह पौधा भारत में प्राचीन समय से ही उपयोग किया जाता था। आयुर्वेदिक दवाओं का मुख्य घटक होता है, और इसके रासायनिक गुणों के कारण यह आज भी लोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अश्वगंधा की जड़ों का सेवन योग्य औषधि बनाने के लिए होता है, लेकिन दुर्भाग्यवश यह पौधा जड़ सड़न के प्रकोप से प्रभावित होता है। इस लेख में, हम अश्वगंधा की जड़ सड़न के लक्षणों और प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानेंगे, जिससे इस प्रमुख आयुर्वेदिक पौधे को बचाया जा सके।

अश्वगंधा जड़ सड़न के लक्षण

अश्वगंधा की जड़ सड़न के प्रकोप के लक्षणों को समझना महत्वपूर्ण है ताकि

समय पर प्रबंधन के उपाय लिए जा सकें। यहां अश्वगंधा की जड़ सड़न के अधिक सामान्य लक्षण हैं:

1. पौधों का पीलापन

अश्वगंधा की जड़ सड़न के प्रकोप के पहले लक्षण में पौधों का पीलापन दिखाई देता है। पौधों के पत्तों का रंग पीला हो जाता है और वे सूख जाते हैं।

2. पौधों की मरने की आदत

अश्वगंधा की जड़ सड़न के प्रकोप में, पौधे मरने की आदत दिखाते हैं। पूरे पौधे की मौत हो सकती है या फिर सिर्फ एक या दो अंग प्रभावित हो सकते हैं।

3. जड़ों का काला हो जाना

स्वस्थ अश्वगंधा की जड़ों का रंग सफेद होता है, लेकिन अगर वे सड़न के कारण सवाली हो जाते हैं, तो वे काले हो जाते हैं।

4. पौधों के सूखना

पौधों के सूखना भी एक अश्वगंधा की जड़ सड़न के लक्षण हो सकता है। पौधों

की सूखने की प्रक्रिया धीरे-धीरे होती है और यह पूरी तरह से सूख जाने पर लक्षण दिखाती है।

अश्वगंधा के जड़ सड़न: का प्रबंधन

अश्वगंधा की जड़ सड़न के प्रकोप को प्रबंधित करने के लिए कुछ प्रभावी उपाय हैं जो उपयुक्त प्रक्रिया के रूप में अपनाए जा सकते हैं।

1. जल संचालन

अश्वगंधा की जड़ सड़न को बढ़ावा देने वाली जल संचालन की रूपरेखा से बचने के लिए, सुखी किस्मों को बढ़ावा दें। ये पौधे सुखे जल को पसंद करते हैं और इसमें प्रबंधित हो सकते हैं। पौधों को अधिक जल संचालन न दें, क्योंकि यह जड़ सड़न के प्रकोप को बढ़ा सकता है। सूखा और साफ जल संचालन को पसंद करें।

2. खाद प्रबंधन

ऐसी खादों का प्रयोग करें जिनका पी एच सामान्य हो, जिससे पौधे स्वास्थ्य रहते हैं तथा उनकी सुरक्षा में मदद मिलती है।

रोग प्रबंधन

- पौधों को नियमित अंतर्दृष्टि और देखभाल का आयोजन करें ताकि किसी भी संकेत को तुरंत पहचाना

जा सके और सही समय पर कदम उठाया जा सके।

- अश्वगंधा की जड़ सड़न को अगर आप पूरी तरह से बचाना चाहते हैं तो जड़ों को जमीन से नहीं उखाड़ना चाहिए।
- अश्वगंधा के बीजों को हमेशा कार्बेन्डाजिम अथवा बीनोमाइल २ ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर के बुवाई में प्रयोग करें।
- खेत में जलभराव की समस्या को कम करने के लिए उचित जल निकासी की व्यवस्था करें।
- अत्यधिक संक्रमण की दशा में कार्बेन्डाजिम अथवा थाइओफाइनैट मिथाइल ०.२ प्रतिशत का घोल बना कर पौधों की जड़ों के पास मिट्टी में छिड़काव करें।

इन प्रबंधन उपायों का संयोजन करके, आप अश्वगंधा की जड़ सड़न के प्रकोप को प्रबंधित कर सकते हैं और इस प्रमुख आयुर्वेदिक औषधि पौधे को सुरक्षित रख सकते हैं। ध्यानपूर्वक और सही समय पर प्रबंधन के उपायों का पालन करके, अश्वगंधा की जड़ सड़न से नुकसान से बचा जा सकता है और इससे आयुर्वेदिक चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा सकता है।